स्टेम कोशिका अनुसंधान के परिणाम संदेह के दायरे में

जब भी किसी प्रयोगशाला से कोई महत्वपूर्ण परिणाम प्रकाशित होता है तो दुनिया भर की अन्य प्रयोगशालाओं में उसे दोहराने की कोशिश होती है। बात यदि स्टेम कोशिकाओं की हो, तो ऐसा होना स्वाभाविक है। स्टेम कोशिका फिलहाल जीव विज्ञान और चिकित्सा के क्षेत्र में एक महत्वपूर्ण शोध विषय है। कारण यह कि स्टेम कोशिकाएं ऐसी कोशिकाएं होती हैं जिन्हें सही परिस्थिति देकर किसी भी अन्य कोशिका में परिवर्धित किया जा सकता है। ऐसी कोशिकाएं बीमारियों के अध्ययन में बहुत सहायक हो सकती हैं और अंग प्रत्यारोपण में इनकी भूमिका देखी जा रही है। इन्हें प्राप्त करना कई कारणों से बहुत मुश्किल रहा है।

वर्ष 2011 में जापान में कोबे स्थित राइकेन प्रयोगशाला से यह सूचना दी गई थी कि उन्होंने शरीर की किसी भी कोशिका को स्टेम कोशिका में बदलने की निहायत आसान तकनीक खोज निकाली है। इससे पहले यह पता चल चुका था कि किसी भी कोशिका के चार जीन्स में परिवर्तन करके उसे स्टेम कोशिका में बदला जा सकता है। ऐसी स्टेम कोशिकाओं को प्रेरित बहु-सक्षम कोशिका कहते हैं। मगर वह तकनीक काफी मुश्किल है। कोबे की राइकेन प्रयोगशाला की हारिको ओबोकाता ने अपने शोध पत्र में बताया था कि कोशिकाओं को यदि तनावपूर्ण परिस्थिति (जैसे उच्च तापमान या तेज़ाबी वातावरण) में पनपाया जाए तो वे स्टेम कोशिका में तबदील हो जाती हैं। यह क्रांतिकारी परिणाम था।

जल्दी ही विभिन्न शोधकर्ता इसे दोहराने में भिड़ गए। अब जगह-जगह से खबरें आ रही हैं कि अन्य शोधकर्ता इस प्रयोग को दोहरा नहीं पा रहे हैं। इसके अलावा कई शोधकर्ताओं ने ओबोकाता के शोध पत्र की सूक्ष्म जांच में पाया है कि इस शोध पत्र में कुछ उल्लेखनीय गड़बड़ियां हैं। खास तौर से, इस शोध पत्र में जो तस्वीरें प्रकाशित की गई हैं उनमें कुछ ऐसे संकेत मिले हैं कि शायद वे असली नहीं हैं। एक कोशिका में स्टेम कोशिका होने के जो चिंह दर्शाए गए हैं वही चिंह एक अन्य कोशिका में भी दिख रहे हैं और संदेह है कि उन्हें बाद में चस्पा किया गया है। इस प्रकार की एक नहीं कई तस्वीरें हैं।

बहरहाल, ओबोकाता व अन्य सम्बंधित शोधकर्ताओं का कहना है कि उनके पास इस प्रयोग के परिणामों की कई तस्वीरें थीं और हो सकता है कि गलती से कुछ उलटफेर हो गया हो। वे इसे हेराफेरी नहीं बल्कि वास्तविक गलती का उदाहरण बता रहे हैं।

जिन शोधकर्ताओं ने इस प्रयोग को दोहराने की कोशिश की है उनमें से कई तो अभी इस शोध पत्र को धोखाधड़ी बताने से बच रहे हैं। कुछ शोधकर्ताओं को लगता है कि यह तकनीक जितनी आसान लगती है, उतनी है नहीं और वे सिर्फ इस आधार पर इसे धोखाधड़ी नहीं कहेंगे कि उनकी प्रयोगशाला में इसे दोहराया नहीं जा सका। वे अभी और कोशिश करेंगे। इसके लिए उन्होंने ओबोकाता व साथियों से तकनीक का पूरा खुलासा करने का आग्रह किया है।

इस बीच राइकेन प्रयोगशाला ने घोषणा की है कि वह इस मामले की छानबीन आरंभ कर चुकी है। इसके साथ ही *नेचर* पत्रिका ने भी छानबीन शुरू कर दी है क्योंकि यह महत्वपूर्ण शोध पत्र *नेचर* में ही प्रकाशित हुआ था। ***(स्रोत फीचर्स)***